भगत कबीर – सबद २५

कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥

रागु गउड़ी, भगत कबीर, गुरु ग्रंथ साहिब, ३२८

कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥
खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥१॥
लागी होइ सु जानै पीर ॥
राम भगति अनीआले तीर ॥१॥ रहाउ ॥
एक भाइ देखउ सभ नारी ॥
किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥२॥
कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥
सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥३॥२१॥

सार: दुःख को समझना, दर्द को बौद्धिक रूप से स्वीकार करने जैसा है जिसे स्वयं महसूस करने से मन में ऐसा परिवर्तन आता है जो वास्तविक जीवन के अनुभवों से बना होता है। पहली अवस्था हमें कुछ अंतर्दृष्टि दे सकती है, लेकिन दूसरी अवस्था सहानुभूति, विनम्रता और विवेक को अधिक गहराई प्रदान करती है। दुःख तब अहम और सार्थक हो जाता है जब वह अहं की अकड़ को तोड़ता है और हमारी चेतना को उन सच्चाइयों तक ले जाता है जिन्हें केवल सोच-विचार से नहीं समझा जा सकता। प्रत्यक्ष अनुभव से प्राप्त ज्ञान केवल बौद्धिक जानकारी से कहीं बढ़कर, वह ऐसी समझ बन जाता है जो हमारे जीवन को देखने और जीने को आकार देता है।

कत नही ठउर मूलु कत लावउ ॥
ऐसी कोई विशेष निश्चित जगह नहीं है जहाँ मैं अपनी जड़ें जमा सकूँ। यह ऐसी खोज की ओर संकेत करता है जिसमें मन अपने मूल को ढूँढ़ता है, जहाँ बेचैन आत्मा को अंततः सुकून मिल सके।

खोजत तन महि ठउर न पावउ ॥१॥

शरीर के भीतर खोजने पर भी मुझे कोई स्थायी ठिकाना नहीं मिलता। इससे स्पष्ट होता है कि यदि मनुष्य ऐसी वस्तु या अवस्था में सुरक्षा खोजे जो मूलतः अस्थायी है तब उसे कभी स्थायी स्थिरता नहीं मिल सकती। (१)

लागी होइ सु जानै पीर ॥

जिसके मन में तड़प हो, वही इस दर्द को समझ सकता है। इसका अर्थ है कि देखना, पढ़ना-लिखना या चर्चा करना, कभी भी प्रत्यक्ष अनुभव की जगह नहीं ले सकता।

राम भगति अनीआले तीर ॥१॥ रहाउ ॥

सर्वव्यापी ईश्वर की भक्ति और चिंतन एक पैने तीर की तरह है। यह दर्शाता है कि तीर की तरह ही, ज्ञान भी कमज़ोरियों को भेदकर अस्तित्व के मूल तत्व तक पहुँच सकता है। (१)(विराम)

एक भाइ देखउ सभ नारी ॥

एकत्व को स्वीकार करने पर मुझे सभी मनुष्य सत्य के खोजी दिखाई देते हैं। इसका अर्थ है कि हर व्यक्ति, चाहे उसकी पृष्ठभूमि कैसी भी हो, सत्य की खोज के सफ़र पर है।

किआ जानउ सह कउन पिआरी ॥२॥

मैं कैसे जानूँ कि प्रियतम को कौन सबसे प्यारा है। यह सावधान करता है कि हमें यह निर्णय नहीं करना चाहिए कि कौन सार्वभौमिक सत्य के सबसे निकट है क्यूंकि सृष्टि का प्रत्येक तत्व उसी एक चेतना को प्रतिबिंबित करता है। (२)

कहु कबीर जा कै मसतकि भागु ॥

कबीर कहते हैं कि जिनके माथे पर सौभाग्य लिखा है। यहाँ संकेत किसी विशेष चुने हुए व्यक्ति होने की तरफ़ नहीं बल्कि सत्य को समझने के लिए ज्ञान की बातें पाने हेतु मन से तैयार होने पर है।

सभ परहरि ता कउ मिलै सुहागु ॥३॥२१॥

सब कुछ छोड़ देने से ही वह सौभाग्यपूर्ण मिलन प्राप्त होता है। यह गहन एकत्व को दर्शाता है जिसमें आत्मा को अपने मूल स्वरूप से जुड़ने में कोई बाधा नहीं आती। (३)(२१)

तत्त्व: भगत कबीर ज़ोर दे कर कहते हैं कि वास्तव में भाग्यशाली वही है जो सत्य का ज्ञान पाने के लिए आंतरिक रूप से तैयार हो। ऐसा सौभाग्य बाहरी सफलता या हालात से नहीं बल्कि खुलेपन, विनम्रता और स्पष्टता से मिलता है जिससे सच को पहचाना, अपनाया और जिया जा सके। इस ग्रहणशील अवस्था में, एकता की वास्तविकता ही समझ, बदलाव और आंतरिक सामंजस्य का स्रोत बन जाती है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com